RESEARCH FRONT

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

वैश्वीकरण के युग में बाबा साहेब डा0 बी0आर0 अम्बेडकर की प्रासंगिकता

रामसूरत हरिजन
राजनीति विज्ञान विभाग,
बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय लखनऊ

आज दुनिया का हर व्यक्ति, समाज व संस्था वैश्वीकरण के युग में जीवन यापन कर रहा है। जिसमें संस्कृतिक, राजनीतिक आर्थिक और सामाजिक तत्वों में तेजी से हो रहे लोकतांत्रिक बदलाव को देखा जा सकता है। आज हमारे इर्द–गिर्द वैज्ञानिक तकनीकी विकास ने आम आदमी को भी बदलने के लिए मजबूर कर रहा है चाहे उसकी भूमिका वैश्वीकरण में हो या ना हो सभी, सभी वर्ग के आम व्यक्ति आज अधिक प्रभावित हो रहा है। उसे यह समझ नही आ पा रही है कि इस प्रक्रिया का स्वरूप क्या है लेकिन वह यह जरूर महसूस कर रहा है कि पहले की अपेक्षा जीवन जीना अब आसान नही रहा है। विज्ञान द्वारा कम्प्यूटर, मोबाइल फोन, इण्टरनेट, इ–मेल, विडियो कान्फ्रेसि, हार्डवेयर, साफ्टवेयर, व आई0टी0 सेक्टर की चीजे एक अनपढ़ व्यक्ति से तो दूर ही है जिसमें कुछ साक्षर व्यक्ति को भी प्रभावित कर रही है एक तरफ कुशल श्रमिक दूसरी तरफ अकुशल श्रमिकों का उनकी योग्यता व क्षमता के अनुसार उन्हें कार्य आवंटन किया जा रहा है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में देखा जाय तो डा0 बी0आर अम्बेडकर की भूमिका अहम है। इन्होंने जिस भारत की कल्पना किया था उसका सकारात्मक परिणाम भविष्य में भारत प्रबुद्ध व आधुनिक भारत की कल्पना थी जिसमें सारे समाज का एक समान विकास हो साथ ही कोई ऊँच–नीच के भेदभाव में लिप्त न रहे जाति, धर्म व वर्णव्यवस्था से ऊपर उठकर एक एकीकृत व संगठित भारत की कल्पना की जहाँ सभी को समान अधिकार, समान स्वंतत्रता तथा सभी में समानता हो। इन्होंने स्वयं को शिक्षित किया तथा दूसरे को शिक्षित होने के लिए आह्वान किया, इन्होंने स्वयं अत्याचार शोषण व जातिवाद से संघर्ष किया तथा वर्णव्यवस्था को असंगत बताकर इसके प्रावधानों को समाज विरोधी करार देकर खारिज कर दिया। फिर एक ऐसे भारत को लाने की क्षमता इन्होंने विकसित की वह क्षमता शिक्षित बनो, संगठित बनो, संघर्ष करो के नारे देकर सभी को एक समान स्तर तक लाने के प्रयास किया जिसमें वे सफल रहे और अखण्ड भारत को शांतिपूर्ण आन्दोलनों द्वारा एकीकृत करने का कार्य किया। आज सम्पूर्ण भारत इस बात को महसूस कर रहा है और आर्थिक व सामाजिक भारत, अभ्युदय के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन न्यौछावर कर दिया।

वैश्वीकरण के इस दौर ने जहाँ प्रत्येक व्यक्ति, समाज व राष्ट्र–राज्य को ही नही अपितु सम्पूर्ण विश्व को एक गॉव में बदलने का कार्य कर रहा है। जिसमें काफी हदो तक उसे सफलता प्राप्त हो गयी है। वैश्वीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था को विकसित व समृद्ध बनाने में अहम भूमिका निभा रहा है। बीसवीं शताब्दी में भारतीय उदारीकरण की प्रक्रिया ने विदेशी पूँजी के निवेश ने कुछ ही दशकों में भारतीयों की कायकल्प करने में अहम भूमिका रही है। विदेशाी मुद्रा भण्डार का तेजी से विकास होना एवं तेजी से हो रहे इस विकास दर से भारत का कद् विश्व में बढ़ा है। वैश्वीकरण ने अपने विकास के साथ–साथ एक नये समाज भी पैदा करता जा रहा है। जिसमें गरीब व अमीर के बीच फासला काफी बढ़ रहा है। इस प्रक्रिया को कुछ लोग ही संचालित कर रहे है तथा उत्पादन व वितरण का जिम्मा भी उन्हीं पर है। दूसरी तरफ एक विशाल गरीबों का वर्ग जिसमें कमजोर व असहाय महसूस कर रहा है। वैश्वीकरण से जुड़े चन्द लोगों का अधिकार क्षेत्र काफी विशाल है साथ ही उनके पास अपार संसाधनों की संभावनाएं विकसित कर लेते है। हर चीज को इजाद करने की उनमें अपार संभावनाएँ है। जबकि वैश्वीकरण से दूर होते समाजों में शिक्षा, स्वास्थ्य, बेरोजगार, गरीब शोषित, असमर्थ व लाचार है। वर्तमान में यह वर्ग अपना स्वयं की प्रबंधन क्षमता संसाधन के अभाव में नही कर पा रहा है। यह वर्ग स्वयं की दशा पर जीने व आगे बढ़ने के लिए छोड़ दिया गया है जो कि विविध समस्याओं व कठिनाईयों को संघर्षमय स्वीकार करके आगे बढ़ना चाहता है फिर लडखड़ा जाता है फिर दो कदम

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

फिर लड़खड़ाना अर्थात इनका जीवन बहुत लम्बा व जुझारू होने वाला है। ऐसा ही डा0 बी0आर0 अम्बेडकर महसूस करते थे जो आज पूरी तरह से खरे उतर रहा है।

एक समाज में व्यापार महत्वपूर्ण कार्य करने हेतु प्रयुक्त किया जाता है जिसका आधार निजी सम्पत्ति और वयैक्ति उद्योग धंधो के लिये किया जाता है। इसके बिना उनके मजदूर को विशेष उत्पादन वितरण स्वयं के सदस्यों के बीच कठिन हो सकता है। निश्चित रूप से एक जुएं की तरह प्रशासनिक धुरी प्रकृति के साथ बेमेल हो सकती है। वास्तव में इसकी सुरक्षा करना इसका चरित्र ही निजी कारखानों हेतु व्यापार अलग–अलग उत्पादन व वितरण हेतु माल तैयार किया जाता है लेकिन एक व्यापारिक समाज को रोक पाना सामज के बस में नहीं है। वस्तुओं की उपेक्षा मुद्रा की एक समाज जिसका कार्य वस्तुओं की उपेक्षा करके विनियम मूल्य को मुद्रा में बेचता है। वास्तव में वितरण प्राथमिक नही है एक विनियम का उत्पादन के लिए उत्पादन लेकिन उत्पादन मुद्रा के विरूद्ध है। यह सही है कि समाज में मुद्रा उनके लिए पहिए की एक धुरी के समान जिसके उनके चारों तरफ की वस्तुओं से संबंध ही सभी मानवीय जाति को मुद्रा केन्द्रिय भूमिका के रूप में प्रभाव उनके हितों के साथ उनकी इच्छाओं के साथ और उनकी महत्वकांक्षाओं को प्रभावित करता है। एक व्यापारिक समाज अवैध कारोबार के लिए नैतिक जिम्मेदारियों के हेतु बाध्य नही होती है। चाहे व सफल हो असफल उसकी गणना का परिणाम बाहरी मुदा के विरूद्ध मुद्रा उत्पादन है।

इस प्रकार डा0 बी0आर0 अम्बेडकर द्वारा उत्पादन व वितरण के बीच नैतिक दायित्व का बाहिष्कार व्यापारिक समाज द्वारा किया जाता है। उसकी जिम्मेदारियां सीमित है। उत्पादन व वितरण वस्तुविनियम व मुद्रा तक ही सीमित हो जाती है। मानवीय समाज के प्रति उसका रवैया भेदभावपूर्ण ही है जबकि व्यापारिक समाज का उत्पादन व वितरण का कार्य मजदूर वर्ग ही करता है। जिसे बड़े विशाल के उत्पादन का माात्रा थोड़ा सा हिस्सा मिलता है जिससे उसका सम्पूर्ण पारिवारिक खर्च भी नही चल सकता है। आज भी वैश्वीकरण द्वारा उदारीकरण और निजीकरण का प्रसार विश्व में हो रहा है। ऐसे में देश का सरकारी क्रिया कलाप सिकुड़ रहा है जबकि निजी क्षेत्र का प्रसार किया जा रहा है। बाबा साहेब अपने शोध के द्वारा यह बताना चाहते है कि उत्पादन व वितरण का विनिमय मूल्य मुद्रा के विरूद्ध है क्योंकि उत्पादन का कार्य एक स्वैच्छिक मनमाना व अवैध कारोबार है जिसकी वैधता तब तक नही मानी जा सकती है जब तक कि व्यापारिक समाज सम्पूर्ण मानवीय समाज का जीवन सुरक्षा हेतु नैतिक उत्तरदायित्व की जिम्मेदारियां न ले लेगा क्योंकि उत्पादन व वितरण का कार्य प्रत्येक समाज को प्रभावित करता है, ऐसा करने के लिए उसके पास प्रत्येक व्यक्ति, समाज व संस्था द्वारा किसी भी प्रकार की वैधता स्वीकार नही करता है और स्वच्छन्द रूप में एक प्रकार का अवैध कार्य है जो एक जुए के समान है इसकी कोई नैतिक उत्तरदायित्व स्वीकार करने हेतु बाध्य नही होता है अपनी शक्ति व बल से सम्पूर्ण समाज को पहिए की धुरी के समान कार्य करता है। धुरी व्यापारिक समाज व उसके चारों तरफ सम्पूर्ण समाज के बीच खरीद फरोख्त उत्पादन व मुद्रा का ऐसा खेल जो प्राकृतिक संगत न होकर कृत्रिम है। इस प्रकार सम्पूर्ण मानवीय समाज को गुमराह व शोषण का यंत्र साबित होता है और अमीर–गरीब का फासला बढ़ाता है। इसलिए व्यापारिक समाज सम्पूर्ण मानवीय समाज के कमजोर कड़ी को नैतिक उत्तरदायित्व का कार्य भी बनता है ताकि सम्पूर्ण समाज ऊँच–नीच, अमीर–गरीब, शोषक–शोषित वर्गो से ऊपर उठकर एक ऐसा विश्व बनाने का कार्य किया जाय जिसमें सभी की समान भागीदारी, समानता, स्वतंत्रता व स्वच्छता की विचारधार प्रत्येक वर्ग, समूह, समाज व संस्था पर समान हो।

डाा0 बी0आर0 अम्बेडकर ने भारतीय समाज के शोषित, दलित वर्गों की सुरक्षा हेतु आर्थिक और सामाजिक लोकतंत्र को उठाने पर पुरजोर दिया। वैश्वीकरण, उदारीकरण व निजीकरण के इस युग में राजनीतिक समानता के साथ–साथ आर्थिक व सामाजिक कल्याण को समाज के निचले तबकों के लिए अतिआवश्यक करार दिया। जब तक आर्थिक व सामाजिक रूप से गरीब व अन्य पिछड़ों को न्यायपूर्ण हिस्सेदारी नही मिल जाती तब तक भारतीय लोकतंत्र केवल पन्नों में ही सिमटा रहेगा। सम्पूर्ण विकसित लोकतंत्र हेतु यह आवश्यक है कि सभी की समान भागीदारी तथा सभी को एक समान स्वतंत्रता प्राप्त होना अनिवार्य नही होता जब तक सभी वर्ग, जाति व समूह व संस्था की भागीदारी सुनिश्चित न हो जाए तब तक भारतीय लोकतंत्र न तो सम्पूर्ण भारतीय समाज को एक मंच पर न ला सकता है और न ही राष्ट्रीय एकीकरण का सपना ही साकार हो पायेगा। फिलहाल वर्तमान व्यवस्था में भारतीय लोकतंत्र

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

एक नाटकीय मंच साबित हो रहा है जहाँ कि कुछ लोगों के चरित्र को ही उदघृत कर रहा है। इसलिए कुछ लोगों का ही लोकतंत्र है न कि सम्पूर्ण भारतीय समाज का लोकतंत्र, यदि सम्पूर्ण भारतीय समाज का प्रतिनिधित्व एक चारित्रिक रूप में किया जाए तो भारत की तस्वीर विश्व पटल पर संगठित भारत की जरूर बनेगी इसलिए जरूरत है कि आत्मनिर्भर वर्ग सभी वर्गों को एक साथ लेकर चले जहाँ जातिवादी, वर्णव्यवस्था, भाषावाद तथा ऊँच–नीच के भेदभाव से ऊपर उठकर एक ऐसे भारतीय समाज का निर्माण किया जाए जहाँ दुनिया की सभी संस्कृतियों में एक बार पुनः नये शिरे से सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने के लिए उन्मूख बने।

वैश्वीकरण के एक ऐसी परिस्थितियाँ तैयार करता है जहाँ कि वैश्वीकरण के दायरे में न आने वाले लोगों और राज्यों को अलग–थलग करके हाशिये पर डाल दिया गया है। वैश्वीकरण और हाशियाकरण एक ही परिघटना की प्रतिकृति है। हाशियाकरण वैश्वीकरण का अनिवार्य परिणाम है। वैश्वीकरण सभी का विकास समान रूप से कभी नही करता जिसके कारण लाखो करोड़ों लोग खुद को हाशिये पर पाकर अवांछित और त्याज्य समझने लगते है। वैश्वीकरण सम्पूर्ण विश्व को एक इकाई बनाने का सपना देखने वाले मैकलुहन ने भी विश्व गॉव की कल्पना को भूलकर विषमता और शोषण पर आधारित साथ ही विश्व के संचालनकर्ता भी इसे मान्यता देने लगे है।

डा0 बी0आर0 अम्बेडकर ने हमेशा प्राकृतिक नियमों को वैधता प्रदान करने का जो सपना देखा था उसे कृत्रिम विश्व व्यवस्था ने खण्डित ही किया है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया समाज सुसंगत कृत्रिम विश्व एकीकरण एक अधूरा सपना है जो कभी भी पूरा नही हो सकता जब तक कि इसमें अमूल चूल परिवर्तन न किया जाय साथ ही वयैक्तिक चरित्र को समाज संगत बनाना होगा स्वयं के हितों में सामाजिक व आर्थिक हित को समाहित किए बिना सपना साकार नही हो सकता है। यदि प्रत्येक राष्ट्र–राज्य ऐसी सकारात्मक पहल करता है जो सम्पूर्ण विश्व को एक धागे में पिरो सके तो सभी को मिलकर अथक प्रयास लगन से ही सकार किया जा सकता है सभी का साथ सभी का विकास विश्व एकीकरण में साथ उत्पादन व वितरण में सभी की समान भागीदारी एवं सभी का समान उत्तरदायित्व साथ ही प्रत्येक का प्रत्येक के साथ जवाबदेही सुनिश्चित करके ही उदयमान व गौरवशाली दुनिया की कल्पना की जा सकती है। निजी हित का सपना व विकास कभी भी सम्पूर्ण समाज व विश्व का सपना व विकास नही हो सकता है। पूँजी के एकीकरण की जगह पर विकेन्द्रितकृत पूँजी ही इस व्यवस्था को सफल बना सकता है। न कि एकीकृत पूंजी। डा0 अम्बेडकर ने अपनी दूर दृष्टि से समाज व राज्य की गतिविधियों को काफी करीब देखा व समझा था जिसका परिणाम उनकी सोच का आज के समाज व राज्य पर पड़ रहा है और उसे लागू करने हेतु राज्य कदम उठा रहा है।

डा0 बी0आर0 अम्बेडकर ने अपने शोध पत्र "The Problems of the Rupee" में में यह विचार प्रकट किया कि व्यापारी वर्ग उत्पादन व वितरण के साधनों पर निजी स्वामित्व की दावेदारी हमेशा करता आया है और मजदूर व शोषित समाज को एक ऐसे चक्रव्यूह में बांधने का कार्य नौकरशाही उद्योगपति व सरकार की मिलीभगत से संभव बनाने हेतु कार्य किया जा रहा है ताकि वैश्वीकरण का विरोध कम से कम हो, साथ ही व्यापारिक वर्ग को यह महसूस होता है कि राष्ट्र–राज्य को अधिक बहुलतावादी और विकेन्द्रिकृत बनाने के लोकतंत्र आग्रह के पीछे जनता के बहुसंख्यक तबके होंगे जिनकी अधिकार चेतना लगातार बढ़ रही है। संगठनवादी रूझान का मकसद भूमण्डल के पैमाने पर मध्यवर्ग के आन्तरिक रूप से जमीनी आन्दोलनों, क्षेत्रीय दावेदारियों और हाशिये पर पड़े नाना प्रकार के तबको की चुनौती का सामना न करना पड़े। क्योंकि यह तबका राष्ट्र–राज्य को लोकतांत्रिक बनने के लिए दबाव डालने का कार्य करेगा। इसलिए यह दोनों प्रवृत्तियॉ भारत जैसे राष्ट्र–राज्यों की स्वायत्तता कम करने की भूमिका निभायेगा। इस प्रकार मानवता का एक बहुत बहुत बड़ा हिस्सा न केवल ऐतिहासिक प्रक्रिया से वंचित कर दिया जायेगा बल्कि वह राज्य की संस्थाओं और बाजार के उत्पादन व वितरण में भी सहभागी नही रह पायेगा। इस नवीन वैश्वीकरण, उदारीकरण व निजीकरण की प्रक्रिया उत्तरोत्तर केन्द्रिकृत, सत्तावादी शासन की प्रवृत्ति निहित होती जा रही है और राष्ट्र–राज्य और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था वैश्वीकरण प्रक्रिया से जितनी जुड़ेगी शासक वर्ग दुनिया भर की जनता, समुदायों, विविध भाषा, और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था वैश्वीकरण प्रक्रिया से जितना जुड़ेगी शासक वर्ग दुनिया भर की जनता, समुदायों, विवधि भाषावाद, और राष्ट्रीयताओं से उतना ही कटता चला जायेगा। इसलिए राज्य जितना अधिक केन्द्रिकृत होता जायेगा जमीन से उठने वाली मांगे उसे उतनी ही कम सुनायी देगी जो कि वर्तमान

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

प्रक्रिया का दौर कुछ ऐसी ही लक्षणों को धारण करती जा रही है। कारपोरेट पहले की अपेक्षा आज कुछ अधिक ही संकींण दायरे में दिख रहा है जो एक खास किस्म के उच्च व मध्यम वर्ग को संगठित कर अपनी अस्मिता को बचाने व बहुसंख्यक वर्ग को असंतुष्ट करके साफ परिलक्षित हो रहा है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि डा बी0आर0 अम्बेडकर अपने समय के दूरदृष्टा थे इन्होंने समाज व राज्य तथा गैर सरकारी आर्थिक संगठनों को अन्तर्राष्ट्रीय चरित्र का बखूबी विश्लेषण व मंथन किया था और आने वाले समय के लिए गरीब व शोषित तथा समाजिक प्रवंचन के शिकार कमजोर वर्गों का इन्होंने खास ख्याल रखा था उनके बारे में भविष्य को लेकर काफी चिंचित भी थे। इसलिए उन्हें जब भी सार्वजनिक प्रतिनिधित्व का कार्य सौंपा गया तब उन्होंने इन कमजोर वर्गों की सुरक्षा हेतु बहुत महत्वपूर्ण कार्य किए। साथ ही भारतीय संविधान में उनके अधिकारों हेतु आरक्षण की व्यवस्था दी साथ में उनके जीवन व स्वतंत्रता की गारन्टी भी सभी नागरिकों को मुहैया कराया है। इतना ही नही भारतीय रूप्ये की समस्या को हल करने के लिए कमजोर वर्गों की अहम भूमिका और उनकी सुरक्षा हेतु काफी अहम कदम भी उठाये थे आज भी मानव विकास रिपोर्ट में यह वर्ग काफी पिछड़ा हुआ है। वैश्वीकरण के इस युग में सामाजिक न्याय हमेशा अपनी आवाज उठाता रहेगा जब–जब और जितनी अधिक अधिक अम्बेडकर हर काल व समय में प्रासंगिक बने रहेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रवि प्रकाश पाण्डेय, 2011 ''वैश्वीकरण एवं समाज'' शेखर प्रकाशन इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या–12
2. महेन्द्र प्रसाद सिंह, 2011 ''भारतीय शासन एवं राजनीति'' प्रकाशन ओरिएन्ट ब्लैक स्वॉन, पृष्ठ संख्या–404–405
3. एस0 एल0 दोषी, 2003 ''आधुनिकता उत्तर आधुनिकता एवं नव–समाज शास्त्री सिद्धान्त, रावत पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–322–323
4. रवि प्रकाश पाण्डेय, 2011 ''वैश्वीकरण एवं समाज'' शेखर प्रकाशन इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या–15–16
5. डा0 बी0आर0 अम्बेडकर, 1923 ''द प्राब्लम ऑफ दि रूपी इट्स ओरिजिन एण्ड इट्स सल्यूशन (हिस्ट्री ऑफ इण्डियन करेन्सी एण्ड बैंकिंग) पब्लिकेशन इन ग्रेट ब्रिटन वाई बटर एण्ड टैनर्लटड फार मी एण्ड लन्दर फर्स्ट चैप्टर, पृष्ठ–1
6. अभय कुमार दुबे, 2007 रविसुन्दरम्, ''भारत का भूण्डलीयकरण'' अध्याय ''राष्ट्रवाद का कारागार और निराकार साइबर स्पेस की बगावत'' वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 331–333
7. सुखदेव खुराट, एम. महामालिक एण्ड निधि सडाना, 2012 ''इकोनॉमिक डिस्क्रीमिनेशन इन मार्डन इण्डिया'', पब्लिकेशन ऑड आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या–148–149
8. अभय कुमार दुबे, 2007 रजनी कोठारी, अध्याय ''भारती का भूमण्डलीयकरण'' के अन्तर्गत अध्याय ''जनता से डरते अभिजन और कमजोर होता राष्ट्र–राज्य'', वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, पृष्ठ–79–80।
9. देवेन्द्र कुमार दास, 1999, ग्लोबलाइजेशन एण्ड डेबलपमेन्ट'' अण्डर दि चैप्टर ''ग्लोबाइजेशन; दि पास्ट इन अवर प्रजेन्ट'' पब्लिकेशन न्यू दिल्ली पृष्ठ सं0–8–9